महत्वपूर्ण एवं खास

खाप पर हथौड़ा

दो अलग धर्मों या जातियों के वयस्कों के बीच आपसी रजामंदी से होने वाली शादी में खाप पंचायत जैसे समूहों या व्यक्तियों की दखल को सुप्रीम कोर्ट ने पूरी तरह गैरकानूनी करार दिया है। भारत के मुख्य न्यायाधीश की भागीदारी वाली सुप्रीम कोर्ट की तीन सदस्यीय बेंच ने ऐसे हस्तक्षेप को रोकने के लिए बाकायदा एक गाइडलाइन भी जारी की। अदालत ने कहा कि इस बारे में संसद द्वारा कानून बनाए जाने तक उसकी यह गाइडलाइन लागू रहेगी।निश्चित रूप से यह फैसला एक जरूरी सामाजिक बदलाव की जमीन तैयार करेगा। यह एक विडंबना ही है कि जो पहलकदमी सरकार की तरफ से काफी पहले हो जानी चाहिए थी, वह न्यायपालिका की ओर से हो रही है। दो वयस्कों को आपसी सहमति से विवाह का अधिकार देना व्यक्ति की स्वतंत्रता का एक बुनियादी तत्व है।

आजादी के 70 साल बाद भी अपने वोट से सरकारें चुनने वाले लड़के-लड़कियां अपनी शादी के बारे में खुद से कोई फैसला नहीं कर पाते। करते हैं तो उनकी जान पर खतरा मंडराने लगता है। यह क्या किसी सभ्य समाज का लक्षण है? भारत में एक व्यक्ति के जीवन में बंदिशें ही बंदिशें हैं। ज्यों ही दो लोग आपसी सहमति से एक साथ जीवन बिताने का फैसला करते हैं, उनके रास्ते में जाति का प्रश्न खड़ा हो जाता है, नहीं तो धर्म का, या फिर पारिवारिक प्रतिष्ठा का। अगर परिवार बाधा न भी खड़ी करे तो समाज के ठेकेदार डंडे लेकर हाजिर हो जाते हैं। खाप पंचायत जैसी संस्थाएं और धार्मिक संगठन उछलकर आगे आ जाते हैं।

छवि बनाने में विफल रहे नंदू भैया

चित्रकूट, कोलारस और मुंगावली में हार की हेट्रिक बना चुकी भाजपा के अंदर खाने में खलबली मची हुई है। सत्ता और संगठन का पूरा दारोमदार अब प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के कंधों पर है। 2014 में लोकसभा चुनाव के बाद नरेन्द्र सिंह तोमर के केन्द्र में मंत्री बनकर जाने के बाद से प्रदेशाध्यक्ष की कमान अगस्त 2014 से नंदकुमार चौहान के हाथों में रही है। नंदकुमार अपने कार्यकाल में अध्यक्ष के रूप में अलग छवि बनाने में विफल रहे है। शुरुआती दिनों में प्रदेश में संगठन महामंत्री अरविन्द मेनन ने संगठन की पूरी बागडोर अपने हाथों में रखी थी। सारे चुनावों उपचुनावों में जोड़ तोड़ से लेकर संगठन को बेहतर बनाने सारे दायित्व मेनन को बखूबी निभाया। मेनन ने कार्यकर्ताओं को साधने के साथ ही मुख्यमंत्री शिवराज के लिये ढाल की भूमिका का निर्वहन किया। मेनन की 2016 में संगठन महामंत्री पद से विदाई के बाद से ही प्रदेश में भाजपा संगठनात्मक ढांचा चरमरा गया है। इतना ही नहीं नंदकुमार चौहान ने एक तरफ जहां कार्यकर्ताओं को पार्टी से दूर किया है वहीं अपने बड़बोले पन की वजह से मुख्यमंत्री और संगठन को मुसिबत में डाला है। भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री सौदान सिंह ने पार्टी पदाधिकारियों की बैठक में स्पष्ट कहा कि प्रदेश में संगठन कमजोर हुआ है। यदि यही रवैया रहा तो सरकार बनाना इतना सरल नहीं होगा। आखिर इस बात के क्या मायने है? इससे यह तो स्पष्ट हो गया है कि प्रदेश में प्रदेशाध्यक्ष और संगठन महामंत्री की भूमिका पर अविश्वास की स्थिति निर्मित हो गई है। कोलारस, मुंगावली उपचुनाव के बाद से ही प्रदेश नेतृत्व में बदलाव की आवाज उठने लगी थी, सोशल मीडिया और मीडिया में भी अटकलों का दौर प्रारंभ हो गया था लेकिन प्रदेशाध्यक्ष के रूप में कौन खरा उतरेगा उसकों भी लेकर कयासों का दौर जारी है।

जिन नामों की चर्चा है उनमें पूर्व प्रदेशाध्यक्ष और केन्द्रीय पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर का प्रमुखता से लिया जा रहा है इसके पीछे का तर्क है कि 2008 और 2013 में तोमर ने प्रदेश अध्यक्ष के रूप में सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है लेकिन क्या आज वे प्रदेशाध्यक्ष की कमान संभालेंगे? केन्द्र में मोदी मंत्रीमंडल में 5वीं, 6वीं जगह बनाकर काम करने वाले तोमर क्या अपने आप को केवल एक राज्य में केन्द्रित करेंगे? तोमर के अत्यंत निकट से जुड़े शुभचिंतक का कहना है कि यह खबरे केवल मीडिया की उपज है। तोमर जी अब केन्द्र की राजनीति पर ही फोकस कर रहे है उनके सामने मिशन 2019 की महत्वपूर्ण जवाबदारी है। ऐसे में मध्यप्रदेश वापसी की खबर केवल शिगुफा है।

प्रदेशा के रूप में जिन अन्य लोगों के नाम है उनमें पूर्व केन्द्रीय मंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते, प्रहलाद पटैल, प्रदेश के पूर्व मंत्री कैलश विजयवर्गीय और वर्तमान में प्रदेश के जनसंपर्क मंत्री नरोत्तम मिश्र के साथ भाजपा के प्रदेश महामंत्री बीडी शर्मा और अजय प्रताप सिंह के नाम प्रमुख है। इन नामों के साथ प्लस और माइनस दोनों जुड़ा है। नरोत्तम और कैलाश को एक बार फिर विधानसभा में अपना भाग्य आजमाना है वहीं कुलस्ते और प्रहलाद पटैल की महत्वाकांक्षा को स्वीकार करना शिवराज सिंह चौहान के लिए सरल नहीं है। अभाविप के संगठन मंत्री और झारखंड में चुनावी कार्य देखने के बाद प्रदेश में भाजपा के महामंत्री बने बीडी शर्मा के समर्थक उन्हें प्रदेशाध्यक्ष बनाना चाहते है। इसके पीछे की वजह उनका पूर्व क्षेत्र प्रचारक अरूण जैन और संगठन महामंत्री सुहास भगत का आर्शीवाद होना बताया जाता है वहीं प्रदेश के राजनैतिक पंडितों का मानना है कि लंबे समय तक छात्र राजनीति करने वाले व्यक्ति को प्रदेश की आवश्यकता है। संघ में भी भारी फेरबदल हुआ है। वर्तमान अधिकारियों द्वारा चुनाव के समय में कोई भी जोखिम मोल लेने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

अन्ना की तमन्ना के यक्ष प्रश्न

देवेंद्रराज सुथार

अन्ना हजारे फिर एक बार अनशन पर बैठ गये हैं लेकिन अबकि बार भीड़ नहीं जुट पा रही है। लगता है सबको भ्रष्टाचार ने अपने मोहपाश में ले रखा है, जिससे वे चाहकर भी आंदोलन का हिस्सा नहीं बन पा रहे हैं। अन्ना मंच पर एक पानी की बोतल के सहारे प्राणतोड़ आंदोलन करके दिल्ली के मद को चकनाचूर करने का प्रण लिये हुए हैं लेकिन भीड़ नहीं जुटे तो आंदोलन, आंदोलन नहीं रहता। सरकार भी सीरियस होकर कोई ध्यान नहीं देती। आत्मविश्वास कमजोर होने लगता है और बी.पी. का लेवल बढ़ने लगता है। ऐसे हालातों में आंदोलन मुजरा बन जाता है। मुजरा भी ऐसा जैसे किसी की मय्यत हो। यह अजीब है कि यहां भ्रष्टाचार के मरने से पहले ही मय्यत हो रही है। अखबार से लेकर इलेक्ट्रानिक मीडिया के चैनलों में भी आंदोलन को लेकर कोई खास हलचल नहीं है।

लोग जान चुके हैं कि यह तो पुरानी फिल्म है। जो पैसा तो पूरा वसूल करती है लेकिन वन्दे मातरम और भारत माता की जय के सिवाए कोई खास मजा नहीं देती। यह हीरो को जिताने का वायदा तो करती है लेकिन अंत में यह पल्टी खाकर विलेन को जिता देती है। इसका कोई इरादा लोकपाल लाने का तो नहीं दिखता है। यह तो जोकपाल-जोकपाल का खेल चटखारे लेकर खेले जा रही है।

अब अन्ना को स्थिति भांप लेनी चाहिए। यह जरूरी नहीं है कि पहली फिल्म सुपर-डूपर हिट चली जाए तो इसका बैक रिटर्न पार्ट भी लोगों में हिट हो जाएगा। जिस तरह इन दिनों अमिताभ बच्चन अपने ट्विटर हैंडल पर फोलोवर्स की गिरती संख्या से निराश हैं, उसी तरह अन्ना भी अपने आंदोलन हैंडल से कम होते फोलोवर्स से काफी गमगीन हैं। मंच पर रौनक गायब है। अन्ना को समझना चाहिए कि आज गांधी बनना भी आसान नहीं है। वो भी उस पार्टी के शासनकाल में, जिस पार्टी को गांधीवाद ज्यादा सूट नहीं करता। जिसके श्रीमुख से सदैव गाय का नाम तो निकलता है लेकिन वह शेर की तरह झपट्टा मारकर शिकार करने में विश्वास करती है। जब रावण के दस सिर थे तब भी राम को हजारों बाणों का सहारा लेना पड़ा था।

गलती का अहसास

स्वामी दयानंद सरस्वती गंगा तट पर ठहरे हुए थे। पास ही एक साधु भी रुका हुआ था। एक दिन वह स्वामी जी से नाराज हो गया। वह प्रतिदिन उनकी कुटिया के पास जाता और उन्हें अपशब्द कहता। लेकिन स्वामी जी सुनकर मुस्करा भर देते। कई बार स्वामी जी के भक्त आवेश में आकर साधु का अनिष्ट करने की सोचते तो स्वामी जी कहते कि एक न एक दिन उसे अपनी गलती का अहसास हो जाएगा। एक बार स्वामी जी के पास किसी ने फलों से भरा एक टोकरा भेजा। स्वामी जी ने अच्छे-अच्छे फल निकाले और एक भक्त से कहा-ये फल पास की झोपड़ी में रहने वाले साधु को दे आओ। भक्त बेमन से साधु के पास पहुंचा और बोला-ये फल स्वामी दयानंद जी ने आपके लिए भेजे हैं। यह सुनते ही साधु बोला-ये फल मेरे लिए नहीं, किसी और के लिए होंगे। मैं तो उसे रोज गालियां सुनाता हूं। भक्त ने लौटकर सारा हाल बता दिया। उसकी बात सुनकर स्वामी जी बोले- तुम अभी उनके पास जाओ और कहो कि आप गालियां नहीं देते, अमृतवर्षा करते हैं। स्वामी जी चाहते हैं कि उनके कारण आपका जो ऊर्जा क्षय होता है, उसकी भरपाई फल खाकर करें। भक्त ने साधु के पास जाकर वही बात दोहरा दी। यह सुनकर साधु तुरंत स्वामी जी के पास पहुंचा और उनके पैरों पर गिर पड़ा।

अब बन ही जाइए इंटरनेट साक्षर

अभी फेसबुक से डाटा चोरी का विवाद ठंडा भी नहीं हुआ था कि एक नया विवाद खड़ा हो गया है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मोबाइल एप्लीकेशन पर। कांग्रेस का कहना है कि पीएम मोदी का मोबाइल एप्लीकेशन डाटा चुराता है। इसके बदले में भाजपा ने कांग्रेस पर आरोप लगा दिये हैं कि वो डाटा चुराकर सिंगापुर भेजते हैं। मोदी के एप्लीकेशन को पचास लाख से ज्यादा लोग डाउनलोड कर चुके हैं।

आंकड़ों की कीमत यह है कि इनका किसी भी मार्केटिंग रणनीति तय करने में खासा अहम रोल होता है। अगर आपके पास अपने ग्राहकों या संभावित ग्राहकों की सटीक सूची है, उनकी रुचियों, नापसंदगियों के आंकड़े, जानकारियां हैं तो मार्केटिंग रणनीति बनाना आसान हो

जाता है। राजनीति में अब राजनीतिक मार्केटिंग बहुत ही लोकप्रिय हो रही है। अब वोटर को किसी भी तरह से साधे रखना जरूरी हो गया है। तथ्य चाहे जो हों, कथ्य अब सोशल मीडिया-ट्विटर, फेसबुक पर ही बन रहे हैं। ये ही आगे जा रहे हैं। मुख्यधारा का मीडिया भी इन्हीं के आधार पर अपनी रिपोर्टिंग कर रहा है, लेख प्रस्तुत कर रहा है। यानी कुल मिलाकर आंकड़े बहुत जरूरी हो गये हैं। उनका विश्लेषण करके उचित रणनीतियां बनायी जाती हैं। आंकड़ों के अध्ययन के लिए एक अलग शास्त्र विकसित हो गया है- डाटा एनालिटिक्स। आंकड़े तरह-तरह से जुटाये जाते हैं, फिर उनका प्रयोग तरह-तरह से किया जाता है। जैसे किसी व्यक्ति की फेसबुक वाल देखकर उसकी पसंदगी-नापसंदगी का अनुमान लगाया जा सकता है। उसकी पसंद के अनुकूल विज्ञापन संदेश देकर उसे अपने पक्ष में किया जा सकता है। जैसे किसी की फेसबुक वाल पर यह साफ होता है कि वह राम मंदिर का गहरा समर्थक है तो कोई राजनीतिक पार्टी उसे राम मंदिर से जुड़े वादों पर फोकस करके, राम सेतु पर फोकस करके अपनी तरफ करने की कोशिश कर सकती है। वह उसे ऐसे संदेश भेज सकती है ईमेल के जरिये, फेसबुक वाल पर कि वह उन संदेशों को पढ़कर उस पार्टी की ओर आकर्षित हो सकता है।

बाधित संसद लोकतंत्र की अवमानना

संसदीय लोकतंत्र में संसद ही सर्वोच्च है। हमारे माननीय संसद सदस्य इस सर्वोच्चता का अहसास कराने का कोई मौका भी नहीं चूकते, पर खुद इस सर्वोच्चता से जुड़ी जिम्मेदारी-जवाबदेही का अहसास करने को तैयार नहीं। संसद में धनबलियों और बाहुबलियों की बढ़ती संख्या और लोकतंत्र की मूल भावना को इससे बढ़ते खतरे की चर्चा और चिंता मीडिया से लेकर सर्वोच्च अदालत तक मुखर होती रही है। जाहिर है, इस गहराते खतरे के लिए राजनीतिक दलों का नेतृत्व ही जिम्मेदार है, जो अक्सर ऐसी जवाबदेही से मुंह ही चुराने के लिए जाना जाता है। बेशक विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की ऐसी तस्वीर बेहद निराशाजनक ही नहीं, चिंताजनक भी है, लेकिन संसद ठप रहने की बढ़ती प्रवृत्ति भी कम खतरनाक नहीं है। संसद का वर्तमान बजट सत्र अपने कामकाज के बजाय हंगामे के लिए ही समाचार माध्यमों में सुर्खियां बनता रहा है। अगर हम संसद की घटती बैठकों के मद्देनजर देखें तो सत्र के दौरान बढ़ता हंगामा और बाधित कार्यवाही हमारे माननीय सांसदों और उनके राजनीतिक दलों के नेतृत्व की लोकतंत्र में आस्था पर ही सवालिया निशान लगा देती है। संसद की सर्वोच्चता का स्पष्ट अर्थ यह भी है कि वह देश हित-

जनहित में कानून बनाने के अलावा सरकार के कामकाज की कड़ी निगरानी और समीक्षा भी करे, लेकिन हमारे देश में लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर का हाल यह है कि देश का बजट तक बिना चर्चा के पारित हो गया।

ऐसे में यह सवाल बेहद स्वाभाविक है कि अगर आने वाले साल में सरकार के आय-व्यय का लेखाजोखा तक बिना चर्चा के पारित हो जाने हैं, तब फिर संसद आखिर है किसलिए? वर्तमान बजट सत्र में जारी हंगामे के चलते न सिर्फ 99 मंत्रालयों-विभागों का बजट-2018 संशोधनों समेत महज 30 मिनट में पारित कर दिया गया, बल्कि राष्ट्रपति-राज्यपालों की वेतन वृद्धि तथा पिछले 40 सालों में मिले राजनीतिक चंदे को जांच मुक्त करने संबंधी विधेयकों को भी बिना चर्चा हरी झंडी दिखा दी गयी। ऐसे में यह सवाल उठना भी बेहद स्वाभाविक है कि फिर पूरे बजट सत्र के दौरान संसद ने किया क्या है? बार-बार हंगामे के चलते कार्यवाही स्थगित होने से साफ है कि काम तो नहीं ही किया, पर दलगत स्वार्थों से प्रेरित आरोप-प्रत्यारोप लगाने में न सत्तापक्ष पीछे रहा और न ही विपक्ष। सत्ता का खेल बनकर रह गयी राजनीति में आरोप-प्रत्यारोपों की कीचड़ उछाल स्पर्धा अप्रत्याशित नहीं है, लेकिन उसके लिए संसद की कार्यवाही को ही बंधक बना लेना तो लोकतंत्र और जनमत की अवमानना ही है। तर्क दिया जा सकता है कि बिना बहस बजट पहली बार तो पारित नहीं किया गया? बेशक काम से ज्यादा हंगामे के लिए पहचानी जाने वाली हमारी राजनीति अतीत में भी दो बार बिना चर्चा बजट पारित करने का कारनामा कर चुकी है, लेकिन संसदीय लोकतंत्र को शर्मसार करने वाली कारगुजारियों की पुनरावृत्ति करने के बजाय उनसे सबक सीखना ही श्रेयस्कर होता है। आखिर इसी संसद ने पिछले साल बजट सत्र में कामकाम का शानदार रिकॉर्ड बनाया था।

हनुमान चमत्कारी ही नहीं, योगी भी हैं

भगवान हनुमानजी इस कलियुग में महान शक्ति हैं, सबसे ज्यादा पूजे जाने वाले इष्ट हैं, जो अष्ट सिद्धि और नव निधि के देने वाले हैं। इसलिए उनकी विश्वासपूर्वक जो पूजा करता है, उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होती है। उनको हिन्दू देवताओं में सबसे शक्तिशाली माना गया है, वे रामायण जैसे महाग्रंथ के सह पात्र थे। वे भगवान शिव के ग्यारवें रूद्र अवतार थे जो श्रीराम की सेवा करने और उनका साथ देने त्रेता युग में अवतरित हुए थे।

भारतीय संस्कृति में मानव जीवन के लक्ष्य भौतिक सुख तथा आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति के लिए अनेक देवी देवताओं की पूजा का विधान है जिनमें पंचदेव प्रमुख हैं। पंच देवों का तेज पुंज श्री हनुमानजी हैं। माता अन्जनी के गर्भ से प्रकट हनुमानजी में पांच देवताओं का तेज समाहित हैं। अजर, अमर, गुणनिधि, सुत होहु- यह वरदान माता जानकीजी ने हनुमानजी को अशोक वाटिका में दिया था। स्वयं भगवान् श्रीराम ने कहा था कि- 'सुन कपि तोहि समान उपकारी, नहि कोउ सुर, नर, मुनि,तुनधारी।' बल और बुद्धि के प्रतीक हनुमानजी राम और जानकी के अत्यधिक प्रिय हैं। इस धरा पर जिन सात मनीषियों को अमरत्व का वरदान प्राप्त है, उनमें बजरंगबली भी हैं। उनको मारुतिनंदन, पवनपुत्र, केशरीनंदन आदि अनेकों नामों से पुकारा जाता है। उनका एक नाम वायुपुत्र भी है, उन्हें वातात्मज भी कहा गया है अर्थात् वायु से उत्पन्न होने वाला। वे सभी कलाओं में सिद्धहस्त एवं माहिर थे। वीरों में वीर, बुद्धिजीवियों में सबसे विद्वान। इन्होंने अपने पराक्रम और विद्या से अनेकों कार्य चुटकीभर समय में पूर्ण कर दिए है। वे शौर्य, साहस और नेतृत्व के भी प्रतीक हैं। समर्पण एवं भक्ति उनका सर्वाधिक लोकप्रिय गुण है। वे ज्योतिष के भी प्रकांड विद्वान थे। वे हर युग में अपने भक्तों को अपने स्वरूप का दर्शन कराते हैं और उनके दुःखों को हरते हैं। वे मंगलकर्त्ता एवं विघ्नहर्त्ता हैं।

मंगलवार को हनुमानजी का जन्म हुआ, ऐसा माना जाता है। भिन्न-भिन्न लोगों ने इस महान् आत्मा का मूल्यांकन भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से किया है। हनुमान का चरित्र एक लोकनायक का चरित्र है और उनके इसी चरित्र ने उन्हें सार्वभौमिक लोकप्रियता प्रदान की है।

उनके चरित्र ने जाति, धर्म और सम्प्रदाय की संकीर्ण सीमाओं को लांघ कर जन-जन को अनुप्राणित किया है। हनुमान का चरित्र बहुआयामी हैं क्योंकि उन्होंने संसार और संन्यास दोनों को जीया। वे एक महान् योगी एवं तपस्वी हैं और इससे भी आगे वे रामभक्त हैं। हनुमान-भक्ति भोगवादी मनोवृत्ति के विरुद्ध एक प्रेरणा है संयम की, पवित्रता की। यह भक्ति एक बदलाव की प्रक्रिया है। यह भक्ति प्रदर्शन नहीं, आत्मा के अभ्युदय का उपक्रम है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि, जब-जब धर्म की हानि होती है, तब-तब मेरी कोई शक्ति इस धरा धाम पर, अवतार लेकर भक्तों के दुःख दूर करती है और धर्म की स्थापना करती है। भारत के तीर्थ स्थलों में कोई भोले का धाम है तो कोई जगत् नियंता श्री विष्णु का प्रतिनिधित्व करता है।

खाना-खजाना

कितने लोगों के लिए -2

सामग्री- 2 बोनलेस चिकेन ब्रेस्ट, थोड़ा मटन कीमा, 1 टेबलस्पून लहसुन-अदरक पेस्ट, एक नींबू का रस, 1 टेबलस्पून बटर, 2 टेबलस्पून तेल, 1 टेबलस्पून कसा अदरक, 3-4 कतरे लहसुन, 4 कटी हरी मिर्च, 1 टीस्पून कतरे बादाम, 1/2 टीस्पून लाल मिर्च पाउडर, 1 टीस्पून गर्म मसाला पाउडर, 1 टीस्पून कसूरी मेथी पाउडर, 1 टीस्पून पुदीना पत्तियां, 1-1/2 टेबलस्पून बेसन, 1/2 कप धनिया पत्ती, 2 टेबलस्पून दही, 2 टेबलस्पून तेल, 1/4 टेबलस्पून चाट मसाला, नमक

विधि- अवन को 250 डिग्री पर प्रीहीट करें। चिकेन को समतल करें। नमक, अदरक-लहसुन का पेस्ट लगाकर नींबू छिड़कें। एक टीस्पून बटर-तेल नॉनस्टिक पैन में गर्म कर लहसुन, अदरक, मिर्च को 1 मिनट सॉते करें। बादाम व मटन कीमा डालकर सॉते करें। लाल मिर्च, 1/2 टीस्पून गर्म मसाला, 1/2 टीस्पून कसूरी मेथी मिलाएं। कीमा मिक्सचर को बोल में पुदीने के साथ डालें। इसे चिकेन ब्रेस्ट पर फैलाकर करेले की शेप में रोल करें। पैन में तेल गर्म करके बेसन भूनें। धनिया, पुदीना, मिर्च मिलाएं। आंच बंद कर एक मिनट स्टर फ्राई करें। मिक्सचर में दही, तेल मिला कर ग्राइंडर में पीस लें। मेथी व चाट मसाला मिलाएं और चिकेन करेले डालकर मिक्स करें। 20 मिनट मैरिनेट होने दें। बेकिंग ट्रे पर तेल लगाकर चिकेन रखें। अवन के तापमान को 180 डिग्री तक कम होने दें, 12-15 मिनट बेक करें।